# 11. दादी जी के महावाक्य

श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले चाहिए दैवीगुणों की धारणा। देवीगुणों की धारणा में कमी आने का मूल कारण है इगा (अहंकार)। अनुभव कहता है भले, ज्ञान बहुत सुन लो, योग बहुत अच्छा लगाओ, बाबा को प्यार करो परन्तु अगर अन्दर में इगो है तो वह सब बातों को ढक देगा, नुकसान कर देगा।

सबसे पहले हमने देखा कि पिताश्री जिनके पास नालेज की इतनी बड़ी अथॉर्टी थी, इतनी हम बच्चों से मेहनत करते, समझते लेकिन मैंने कभी उनके व्यवहार में इगो देखा नहीं। इगो अभिमान पैदा करता है। ईर्ष्या भी पैदा करता है क्योंकि देह–अभिमान से इगो आता, नशा चढ़ता।

हमें कभी इगो इगो न आये उसकी अनेक युक्तियाँ बाबा ने बताई हैं। पहले तो हमारी बुद्धि में रहता इस ज्ञान की पढ़ाई में मैं सदैव स्टूडेंट हूँ। जितना हम पढ़ाई करें उतनी थोड़ी है।

सदा मैं बुद्धि में रखती हूँ कि हर बात में मुझे परफेक्ट होना है। तो कौन किस बात में परफेक्ट है, वह मुझे देखना है। हर एक से मैं विशेषता उठाती हूँ। ऐसा नहीं सोचती हूँ कि यह ऐसा है, वैसा है। मैं यह नहीं सोचती मैं दादी हूँ। हम सदैव स्टूडेंट हैं। कोई का कैसा भी व्यवहार है, चलन है, दृष्टि–वृत्ति है, हमें उनसे अच्छा सीखना है।

बाप शिक्षक है पर हम हर एक से शिक्षा लें तो हमारी दृष्टि ऐसी रहती जिससे न खुद इगो आता, न कभी किसी के लिए नफ़रत आती है।

बाबा कहते कभी किसी को बुरे भाव से नहीं देखो। बुराई सबमें हैं, तुम बुराई नहीं देखो, अच्छाई देखो। न बुराई को बुद्धि में लाओ।

यह नालेज और योग हमको श्रेष्ठता, अच्छाई वा ऊँचाई लेना सिखाता है। श्रेष्ठता लाना ही गाडली स्टूडेंट बनना है।

ओम् शांति।